आपके विचार ही आपकी दुनिया बनाएंगे...

(राजयोगी ब्र.कु. [illegible] भाई)

जैसा सोचेंगे वैसा बनेंगे। इस बात को गहराई से समझने की ज़रूरत है, सिर्फ बोलने तक ही नहीं। इसका हमारे जीवन पर क्या असर पड़ता है, क्या सोच का परिणाम होता है, इसके सम्बन्ध में हमें सचेत रहना चाहिए। अन्यथा जीवन को यूं ही असफल कर बैठेंगे। ज़रा इस बारे में सोचते हैं, समझते हैं।

हम अपने शरीर की सफाई रोज़ करते हैं लेकिन मन को गन्दे विचारों से कितना साफ करते हैं? हम इन नकारात्मक विचारों को जमा करते हैं तो धीरे-धीरे ये हमारा व्यवहार बदल देते हैं। जो विचार आप भीतर रखते हैं वही आपकी दुनिया बनाते हैं। अगर आप सुख और शान्ति चाहते हैं, तो पहले अपने मन के अन्दर में शान्ति पैदा करें। शान्ति मन में चाहिए ना! मन में चलने वाले विचारों को देखें कि इससे कौन-सी शक्ति उत्पन्न होती है? पॉज़िटिव या निगेटिव! अगर पॉज़िटिव है तो वह संकल्प आपको सुकून देगा, मन में शान्ति पैदा करेगा।

हममें से अधिकतर लोग अपने आपको असंभव मान लेते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि उनके पास सही साधन, समय या टैलेंट नहीं है। लेकिन असली असंभव वह है जिससे हमने खुद अपने मन में बन्द कर रखा है। जब हम अपने दिमाग को उच्चतम स्तर पर लेकर जाते हैं तब अपनी सीमाएं तोड़ते हैं। फिर कोई लक्ष्य छोटा या बड़ा नहीं रहता। मन में जो मान्यताएं बनाई उसकी सीमाओं के मध्य रहने के आदि हो गए हैं। हमने अपने कम्फर्ट के किले के मध्य खुद को बन्द कर दिया है। तभी हम अपने आप को असंभव मान लेते हैं। उससे बाहर जाने से डर लगता है।

हम अक्सर मान लेते हैं कि हमारे विचार सही हैं और उनमें बदलाव की ज़रूरत नहीं है। लेकिन वास्तव में बुद्धिमानी तब आती है जब हम अपनी मान्यताओं पर पुनर्विचार करें। सोच को लचीला बनाना और नई जानकारियां स्वीकार करना, हमें बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है। जब हम अपने विचारों को चुनौति देते हैं तो हमारे लिए नए अवसर खुलते हैं।

स्वयं का सच्चा लीडर वही बनता जो ऊंचे विचारों को स्थान देता है, नवाचार करने की हिम्मत रखता है। सच्चा नेतृत्व केवल ताकत और अधिकार के बारे में नहीं होता, बल्कि यह साहस और ईमानदारी के बारे में होता है। जब हम डर को छोड़ खुलकर अपने अनुभव को साझा करते तभी हम टीम के साथ और गहरा जुड़ाव बना पाते हैं। किसी चिन्तक ने कहा है- 'वास्तविक नेतृत्व साहस के साथ जोखिम उठाने और असफलताओं से सीखने में है।' लीडर वही होता है जो कठिन सवाल पूछता है, बदलाव के लिए तैयार रहता है और दूसरों को भी वही करने की प्रेरणा देता है।

परमात्मा ने सबको बराबर शक्ति दी है लेकिन हम इनके उपहार को सही मायने में न समझ पाते हैं और न ही उसे उपयोग व प्रयोग करने के लिए तैयार होते हैं। प्रभु प्रदत्त बेशकीमती उपहार यूं ही जीवन के साथ समाप्त कर देते हैं। हम अपनी सोच से अपनी दुनिया बना लेते हैं। हम ईश्वर के उपहार की अवहेलना करते हैं। तो हम जैसी सोच को आधार बनाएंगे वैसी ही हमारी दुनिया बनेगी। तो हम आपसे यही कहना चाहते हैं कि अपनी सोच को श्रेष्ठ बनाएं, सुन्दर दुनिया बनाएं।

लक्ष्य के साथ लक्षण भी प्रैक्टिल में धारण हों

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

समय अनुसार अभी मगन से भी ऊपर लवलीन अवस्था का अनुभव करना है। यह लवलीन अवस्था सभी समस्याओं को समाप्त कर देगी। अगर प्यार में लीन हो गये तो नो प्रॉब्लम। तो जब भी कोई बात आवे तो जो गहरे अनुभव हैं उनमें समा जाओ। जो अन्तर्मुखी रहते हैं वह शारीरिक भान से जैसे आउट हैं फिर माया से युद्ध करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। संगठित योग में एक-दो के वायब्रेशन भी मिलते हैं इसलिए योग की जो भिन्न-भिन्न स्टेजेस हैं, उस एक-एक स्टेज का अनुभव करो। यहाँ का यह अनुभव वहाँ भी बहुत सहयोग देगा।

तो एक है वर्णन करना, दूसरा है मगन रहना, तीसरा है एकदम उस स्वरूप में खो जाना। तो इसके ऊपर बार-बार दृढ़ता का स्टैम्प लगाते रहो तो आपकी यह नेचर नेचुरल हो जाएगी क्योंकि हम ही तो अनुभव के अधिकारी हैं। दृढ़ संकल्प किया कि अशरीरी हो जाएं, तो अनुभव होना शुरू हो जाए। कभी सोचें कि बीजरूप अवस्था का अनुभव करना चाहिए, तो वो भी सहज हो जाएगा, सिर्फ दृढ़ता की चाबी सौगात रूप में अपने साथ रखना। कुछ भी हो करना ही है, बनना ही है, यह हमारा लक्ष्य हो। जो लक्ष्य है अब उस लक्ष्य को लक्षण में लाना है। लक्ष्य और लक्षण एक हों। जो बाबा ने लक्ष्य दिया है वही लक्षण प्रैक्टिकल में धारण रहे तो हम सभी बाबा के समान सहज ही बन सकते हैं। हम बाबा के दिल के तख्तानशीन बच्चे ज़रूर बाबा समान बनेंगे ही। छोटी-मोटी बातें तो आयेंगी। समय

अनुभव करना वो अलग चीज़ है। लीन हो जाते हैं तो सबसे दूर मायाजीत, प्रकृतिजीत, स्वभावजीत, एक-दो में ज़रा भी खिटखिट आ ही नहीं सकती है। यह मगन अवस्था, लवलीन अवस्था अर्थात् बाबा के लव में लीन हो जाना। तो बाहर की कोई भी आकर्षण हमको आकर्षित नहीं कर सकती है। लव तो हम सबका है, लव के बिना ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी बन करके चल ही नहीं सकते हैं। लेकिन लगन में मगन अर्थात् लवलीन रहें तो उसमें कोई भी शक्ति की कमी नहीं है। उसमें सुख-शान्ति की अनुभूति, पवित्रता, आनंद और प्यार की अनुभूति समाई हुई रहती है।

प्रति समय, समय भी पेपर लेगा, माया भी पेपर लेगी। लेकिन हमारे पास अपनी शक्तियों के शस्त्र कितने हैं? अगर माया किसी भी रूप से आये तो हमारी जो शक्तियां हैं वो किसलिए हैं? समय पर यूज़ करने के लिए ही हैं। तो सदा यह लक्ष्य रखो कि मुझे बाबा समान बनना ही है और हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा, हर कल्प में हम बने हैं इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है, सिर्फ उसे स्मृति में रिपीट करना है, जो कल्प पहले किया है वह हम करेंगे।

तो बाबा के लव में लीन रहना और लव का तो लवलीन अवस्था के अनुभव में आ जाता है। जो लवलीन होता है वो लव के स्वरूप में आ जाता है। लव का मनन करते जब स्वरूप बन जाते हैं तो यह मनन नहीं चलता है लेकिन स्वरूप में स्थित हो जाते हैं। उस समय बाबा हमको अपनी समझ भी देता है और बाबा को समझ मिलने से हम और भी जो मगन अवस्था में जा रहे हैं, उसमें मदद मिल जाती है। तो सारे दिन में जिस समय फुर्सत मिलती है, अमृतवेले या सुमाशाम के टाइम जब योग करते हैं तो उस समय हम मगन अवस्था का अनुभव करें।

जब साक्षात बाप समान बनें... तब साक्षात्कारमूर्त बनेंगे...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

भगवान का कारोबार कम चलाक नहीं है। ऐसे नहीं किसने देखा! छोटी-छोटी बात क्यों उठाते हो। बाबा ने कहा है- बच्चे यह ईश्वरीय कारोबार है। उसमें ऐसे नहीं चल सकता। ऊपर चढ़ने के लिए सावधानी की सीढ़ी है। कदम-कदम पर बाप का हाथ भी है, साथ भी है। हाथ में हाथ है तो आराम से जा रहे हैं। साथ भी है। कभी यह अभिमान न आये मैं अकेली जा सकती हूं, नहीं। बाबा लिये जा रहा है। बिगर पूछे आगे नहीं जा सकती हूं। ऐसे नहीं क्या ज़रूरत है पूछने की। अभिमान अन्दर घुस जाता है या नीचे उतर जाता है उसको पता नहीं चलता है। पता चलना चाहिए मैं आगे बढ़ रही हूं या रूकी हुई हूं या उतर रही हूं? बाबा के साथ गहरा संबंध है। समीपता आगे बढ़ाती है। सदा अन्दर से महसूस हो। इतनी दूरी भी बाबा से न हो। नहीं तो पांव फिसलने में देरी नहीं होगी। ऊपर ले जाने वाला एक है, नीचे उतारने वाली अनेक बातें हैं। बाबा जो कहता है वह स्थिति बनाओ तो उसमें बाबा मदद देगा। बाबा की इच्छा है बच्चे साक्षात मेरे समान बनें तब साक्षात्कारमूर्त बनेंगे।

बाबा ने आज स्पष्ट समझाया है सिर्फ भाषण करने से थोड़े समय के लिए खुश होंगे परन्तु अन्दर का अनुभव कभी भूलेगा नहीं, वह अनुभव सुख का, शान्ति का, सच्चे प्रेम का, ऐसा हो जो मीठी दृष्टि के द्वारा, अन्दर की वृत्ति के द्वारा, भावना के द्वारा उनके अन्दर आये कि इनकी भावना कितनी अच्छी है। ऐसे नहीं अब तो सब सहज है। आराम से सेन्टर पर रहते हैं अभी कोई विघ्न नहीं, इसमें खुश हो जायें। सिर्फ सहज हो गया, नहीं। श्रेष्ठ हो। श्रेष्ठ योगी किसको कहा जाता है, यह ध्यान रखो। जब तक महातपस्वी नहीं बने हैं तब तक साक्षात्कारमूर्त नहीं बन सकते हैं। इतना ऊंचे ते ऊंचा बाप, उसने हमको इतना ऊंचा उठाया है।

आज बाबा ने अनन्य का अर्थ बताया - अनन्य माना जो अन्य काम न करे, वह तुम करो। आगे बाबा कहता था यह मेरा अनन्य बच्चा है माना इसका अन्य कोई नहीं। आज कहा काम ऐसा करो जो कोई न करे। किसी को न देखो। तो साक्षात्कारमूर्त बनने के लिए बापदादा और आप तीनों इकट्ठे रहो। साक्षात बाप समान बनना है तो आप में बापदादा सदैव दिखाई पड़े। हर कर्म में, हर संकल्प में, हर श्वास में और हमारे संस्कारों में जो बापदादा के संस्कार हैं वह दिखाई दें। क्योंकि दोनों से ही हम वर्सा ले रहे हैं। भले ब्रह्मा बाबा कहता वर्सा शिवबाबा से मिलता है, मैं नहीं देता। यदि आपके बच्चे न बनाते तो क्या वह देता? बाबा हमसे ठगी करता है ना! उनसे वर्सा कैसे लेंगे? अगर ब्रह्मा के बच्चे सच्चे ब्राह्मण न बनें तो शिवबाबा वर्सा देगा क्या? इनसे पूछेगा ना इसको वर्सा दूं? जिसने एडॉप्ट किया है माँ की तरह, बाप की तरह से पालना दी है। बाप, टीचर, सतगुरु तीनों रूप इसमें देखे हैं। तो लायक कहां से बनेंगे? लायक बनने का वर्सा कहाँ से मिला है? बाबा पालना देकर लायक बना रहा है। आजकल की माँ के मुआफिक नहीं, जन्म एक माँ देती है, पालना दूसरी देती है। हमारी वही माँ जन्म देती, वही पालना देती। ऐसी पालना जो हमको मिल रही है वह पालना ही हमको पढ़ाई से समझदार बना रही है, साथ-साथ धारणा की मूर्ति बना रही है।

बाबा ने हमें नाम दिया है - तुम हो विश्व के नव निर्माता...

आज हरेक अपनी डायरी में नोट करो कि मैं संस्कारों से मुक्त हूं। अगर संस्कार कभी इमर्ज हों तो समझो संस्कारों के वश है। जब कोई कहता मैं क्या करूं, मेरे संस्कार हैं ना! तो मुझे उसके ऊपर बहुत तरस आता है। मैं कहती तुम इस सुहावने संगम की स्वर्णिम लॉटरी को क्यों खत्म करते हो? जब सहारा मेरा बाबा है, तो उसका सहारा छोड़ संस्कारों का सहारा क्यों लेते हो? उन्हें क्यों प्रधान बनाते? तुम लेके सहारा बाबा का इन सबको खत्म करो।

कोई राजा भी जब हार खा लेता तो हथियार आदि सब सरेन्डर कर देता है। हमें अपने संस्कारों को सरेण्डर कर देना है। जो अपने संस्कारों को बाबा के चरणों में सरेण्डर करता वही राजतिलक पाता है। संस्कारों को मार दो तो सब झगड़े समाप्त हो जाएंगे।

मैंने देखा है - जहाँ युवा वर्ग है - विशेषकर कुमार हैं वहाँ कभी-कभी पार्टीबाजी हो जाती है। आपस में किसी बात में मतभेद होगा - कहेंगे अच्छा दिखाऊंगा, बताऊंगा... अरे किसको दिखाओगे, बताओगे? मैंने देखा है - थोड़ा भी कन्हें नहीं होगी तो कहेंगे जाओ - जाकर करो। खुद सो जाते, समझते मैं सहयोग दूंगा तो काम होगा। अगर नहीं दूंगा तो काम बन्द हो जाएगा। बिल्कुल ही बुद्धि विपरीत हो जाती है। हम सब तो सर्वेन्ट हैं। बाबा के सहयोगी हैं, इसलिए किसी की ऐसी रिपोर्ट नहीं आनी चाहिए। न कभी पार्टीबाजी करो, न अपनी होशियारी दिखाओ, न शैतानी दिखाओ... बाबा के घर में किसकी भी बादशाही चल नहीं सकती। ऐसा जो करता वह चल नहीं सकता। आप अपने संस्कारों की होशियारी किसको दिखाते हो। बाबा को? ब्राह्मणों को? इसलिए बाबा ने हमें नाम दिया है - तुम हो विश्व के नव निर्माता। हम सब हैं अपनी जीवन का और विश्व का नव निर्माण करने वाले। हम विश्व के निर्माता हैं। निर्माता माना माँ बनकर, मातृ स्नेही बनकर निर्माण करना। इसलिए अपना चार्ट चेक करो। अष्ट शक्तियों को रोज़ देखो और अपनी शैतानियों को समाप्त करने का संकल्प करो। जब सब पुरानी आदतें समाप्त हों तब कहेंगे भट्ठी की सफलता। तभी जयजयकार होगी।

तुम कुमार हो - डबल लक्की। तुम्हें अनेक सहज साधन मिले हैं। तुम स्वतन्त्र रह सकते हो। सच्चे सन्यासी जीवन में रह सकते हो। तुम अकेले रह सकते हो, अकेले सेवा में जा सकते, बुद्धि का दान दे सकते। सबसे अधिक लक्की आप हो। बिल्कुल स्वतन्त्र हो। आप फ्री हो, कमाओ मौज करो, आपको कोई भी चिंता नहीं।

कुमारी जीवन भी बन्धन की जीवन है। कुमारों का चोला बन्धन मुक्त चोला है। तन की शक्ति, मन की शक्ति, धन की शक्ति है। कुमारियों को चोला ही ऐसा मिलता जो सम्भालना पड़ता। आप बाबा के लक्की बच्चे हो। जहाँ कुमार हैं वह गुलदस्ता फलीभूत है परन्तु पार्टीबाजी से मैं नमस्कार करती हूं। पार्टीबाजी के संस्कार यहाँ तोड़कर जाओ। ईश्वरीय बन्धन का कंगन बांधो। यह जीवन हर्षितमुख रहने की है। हँसी-मज़ाक नहीं। हँसी-मज़ाक भी बड़ा नुकसान करती है। यह जीवन रूह रिहान करने की है। फालतू बातें करने की नहीं। इसलिए, बैठकर आपस में रूह रिहान करो। तेरी-मेरी बातें करना, बैठकर एक-दूसरे की कमियों का वर्णन करना, यह मर्यादा नहीं। बहन से अकेले में बैठकर बातें करना भी ब्राह्मणों की मर्यादा नहीं। जो इस मर्यादा की लकीर को तोड़ता, वह अपने स्वमान को तोड़ता है।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

देह की आकर्षण भी विषैला सांप है। एक आकर्षण में आता, 100 पर दाग लगाता। ऐसा दाग कभी भी न लगाओ। बाबा का यह स्ट्रिक्ट ऑर्डर है। कई कहते हमें सेन्टर पर भोजन मिले। मैं कहती हूं, बाबा का घर सो तुम्हारा घर है। भोजन की बात नहीं लेकिन देखा गया है इससे हमारी ईश्वरीय मर्यादा टूटती है। इसलिए यह भी बन्धन है। कइयों को यह बन्धन बहुत कड़ा लगता। लेकिन यही बन्धन हमारे स्वमान को आगे बढ़ाने वाला है। हमारा नियम है - जितना हम पवित्र भोजन खायें उतना अच्छा है, लेकिन कोई कुमार अपनी माँ के साथ रहे और कहे हम तो अपने हाथ से बनाकर खाएंगे- तो इससे बहुत बड़ी डिससर्विस होती है, झगड़ा होता है। वैर-विरोध करके ब्रह्माकुमारी संस्था का नाम-बदनाम करें, ऐसी नौबत नहीं आनी चाहिए। जहाँ तक हो सके योग की शक्ति को बढ़ाओ, आदतों से मुक्त रहो।